# UNIT → I

→ Short term definition

1. Swar :→ एक सप्तक में 22 श्रुतियों की चुनी गयी सात श्रुतियों में जो एक दूसरे से कुछ अन्तर पर, तथा जो सुनने में मधुर है, स्वर कहलाती है। श्रुति और में कोई अन्तर नहीं है। दोनों ही संगीतोपयोगी नाद है। अन्तर केवल नामों में है।

सप्तक की श्रुतियों में से दूर की सात श्रुतियाँ छांटी गयी और उन्हें स्वरों का नाम दे दिया गया। सात श्रुतियों के नाम इस प्रकार है — षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद।

इन्ही स्वरों को व्यवहार में अथवा गाने में इनके प्रथम अक्षरों से सम्बोधित करते है। अर्थात् 'स रे ग म प ध और नि' कहकर पुकारते। स्वर के दो रूप होते है।

1. शुद्ध अथवा अचल स्वर
2. विकृत अथवा चल स्वर

1. शुद्ध अथवा अचल स्वर :→ जब ऊपर लिखे सात स्वर अपने निश्चित स्थान पर रहते है तो शुद्ध स्वर अथवा प्राकृतिक स्वर कहलाते है। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि जब ये सातों स्वर अपने निश्चित श्रुतियों पर स्थिर रहते है, तब ये शुद्ध स्वर कहलाते है। परन्तु इन सात स्वरों में से 'रे, ग, म, ध, नि' स्वर शुद्ध रूप के अतिरिक्त अपने विकृत रूपों में भी है अर्थात ये स्वर अपने स्थान से कभी-कभी ऊपर या नीचे भी आ जाते है।

2020-4-25 18:53

Scanned with CamScanner

रूप होते हैं। इन सात स्वरों में के 'सा' और 'प' स्वर अपने स्थान नही बदलते, इसलिए यह दोनो स्वर अचल स्वर कहलाते हैं।

2. विकृत अथवा चल स्वर :→ जब रे, ग, म, ध, नि स्वर अपने शुद्ध स्थान से ऊपर या नीचे की ओर हटते हैं तब उन्हें विकृत या चल स्वर कहते हैं। सात स्वरों में केवल षड्ज और पंचम स्वरों को छोड़कर बाकी पाँच स्वर विकृत हैं, क्योंकि ये स्वर अपने स्थान से विकृत होते हैं अथवा नीचे ऊपर हटते हैं इसलिए इनको विकृत स्वर कहते हैं।

## स्वर

7 शुद्ध स्वर

स, रे, ग, म, प, ध, नि

5 विकृत स्वर

रे, ग, म, ध, नि

4 विकृत स्वर

रे, ग, ध, नि

एक तीव्र विकृत

मे

2020-4-25 18:54

Scanned with CamScanner

2. सपाट :→ जिस तान में स्वर क्रमानुसार हो उसे शुद्ध या सपाट तान कहते हैं। इस तान के लिए काफी तैयारी होनी चाहिए, गायक दो या तीन सप्तकों की सपाट तान लिए करते हैं। इस तान में स्वरों का क्रम इस प्रकार होता है।

जैसे :→ ग म, प ध, नि सा, रे ग, म प, म ग, रे स

नि ध, प म, ग रे, स

3. वर्ज्य स्वर :→ जो स्वर राग में प्रयोग नहीं किया जाता, वह राग का वर्जित स्वर कहलाता है, वर्जित माने जो प्रयोग न किया जाए, उदाहरण के लिए राग भूपाली में 'म' और 'नि' स्वर नहीं लगते। इस कारण 'म' और 'नि' स्वर राग भूपाली के वर्ज्य स्वर हुए, बहुत-से रागों में कुछ ऐसे स्वर होते हैं जो आरोह में लगते हैं पर अवरोह में नहीं लगते, इसी प्रकार राग के अवरोह में कोई स्वर वर्ज्य हो सकता है, और आरोह में उसी स्वर का प्रयोग हो सकता है। जैसे :→ राग खमाज के आरोह में 'रे' स्वर वर्ज्य है, पर अवरोह में यह स्वर लगता है।

2020-4-25 18:54

Scanned with CamScanner

4. वक्र स्वर :→ आरोह तथा अवरोह में किसी स्वर तक जाकर पीछे के स्वर पर लौट जाते हैं परन्तु फिर पहले वाले स्वर को जोड़कर या टालकर आगे का स्वर कहते हैं। यहाँ पर जिस स्वर तक जाकर पीछे लौटते हैं तथा फिर जिसे आगे बढ़ने पर टाल दिया जाता है उसे वक्र स्वर कहते हैं। उदाहरण देने से यह बात स्पष्ट हो जाती है, जैसे - प ध नि सां। यहाँ पर 'नि' स्वर तक जाकर लौटकर 'ध' स्वर पर जाते हैं तथा फिर 'नि' को छोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं। इसलिए 'नि' स्वर वक्र हुआ। ऊपर का उदाहरण आरोह में वक्र स्वर का है। जैसे - प म ग म रे सा, यहाँ पर 'ग' स्वर वक्र है, क्योंकि इस स्वर से पीछे लौटते हैं फिर उसे छोड़कर आगे बढ़ते हैं।

5. मींड → किसी निश्चित स्वर से दूसरे निश्चित स्वर तक घर्षण द्वारा जाना मींड कहलाता है। मींड में एक स्वर से दूसरे स्वर तक जाने के लिए नीचे के स्वरों को केवल स्पर्श मात्र करते हैं तथा बीच के स्वरों को खींचते हुए निश्चित स्वर पर आ जाते हैं। मींड में खटका तथा कोमलता अधिक आ जाती है। यह भी प्राचीन गमक का एक प्रकार है। मींड को निकालने के लिए दो स्वरों के ऊपर उल्टा चाँद बनाते हैं जैसे - प ग या सा पे प से ग कहने में म का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता, परन्तु प ग तक आवाज़ खींचने में म स्वर का स्पर्श हो जायगा।

2020-4-25 18:54

Scanned with CamScanner

6. स्पर्शस्वर (कण स्वर) भारतीय संगीत में गायन अथवा वादन को मधुर बनाने के लिए स्वरों में सूक्ष्म अंगों का प्रयोग किया जाता है। मुख्य स्वरों पर अन्य स्वरों का स्पर्श करने से मुख्य स्वरों की मधुरता बढ़ती है, जैसे:- धैवत मुख्य स्वर को कहने के लिए निषाद स्वर का केवल कण या स्पर्श धैवत स्वर की मधुरता को बढ़ा देता है। स्पर्श को कण स्वर (Grace Note) भी कहते हैं। यह स्वर गले के तैयार होने पर ही सरलता से निकलते हैं। लिखने के लिए इन स्वरों को मुख्य स्वरों के ऊपर लिखते हैं। जैसे:- प

7. कृन्तन :- इसका प्रयोग 'ठुमरी' तथा सितार वादन में विशेष रूप से किया जाता है। देखा जाय तो कृन्तन में जमजमा, गिटकिड़ी, मुर्की एवं खटका आदि का समावेश होता है, सितार पर कृन्तन बजाते समय मिजराब के एक ही प्रहार से दो, तीन अथवा चार स्वरों को शीघ्रता से बजाया जाता है। जैसे:-

रेस, रेसनि, रेसनिसा अथवा धप धपम धपमप इत्यादि।

2020-4-25 18:55

Scanned with CamScanner

सम्पूर्ण बोले के समूह को आवर्तन कहते हैं, उदाहरण के लिए - झपताल में दस मात्राएं होती है। इन मात्राओं को एक बार कहने से एक आवर्तन होता है। एक आवर्तन समाप्त होने पर ताल का दूसरा आवर्तन चलता है। इस प्रकार आवर्तनों का क्रम चलता रहता है। झपताल का एक आवर्तन इस प्रकार होता है।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| धी | ना | धी | धी | ना | ति | ना | धी | धी | ना |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |

9. घसीट :→ सूत प्राय: बिना परदे के वाद्यो पर बजायी जाती है तथा सितार पर इसे घसीट के नाम से पुकारते है। एक परदे से आरम्भ करते हुए किसी दूरस्थ परदे तक मिज़राब के एक ही प्रकार से घसीटते हुए जाने की क्रिया 'घसीट' अथवा 'सूत' कहलाती है

10. छूट :→ संगीत में 'छूट' शब्द का अर्थ होता है छोड़ना अर्थात ऊँचे स्वर से नीचे के स्वर की ओर शीघ्रता से आना, जैसे :→ जब तार सप्तक के किसी स्वर पर थोड़ा ठहकर शीघ्रतापूर्वक बीच के स्वरों

2020-4-25 18:55

Scanned with CamScanner

को बजाते हुए मध्य सप्तक के 'सा' तक आया जायगा तब उसे 'छूट' कहेंगे। उदाहरण के लिए जैसे :-

गं- -रें सांनि ध्प मग रेसा

सां - नि ध्प मग रेस । अथवा

पं - - मं गंरें सांनि ध्प मग रेस निसा इत्यादि।

11. ध्वनि आन्दोलन :→ ध्वनि की उत्पत्ति कम्पन अथवा आन्दोलन (Vibration) से होती है। साधारणतः जब किसी वाद्य के तार को छेड़ा जाता है, तो उसमें कम्पन अथवा आन्दोलन उत्पन्न होता है, जिससे ध्वनि सञ्चारित होती है। तार को छेड़ने से वह एक ओर कुछ दूरी तक जाता है फिर लौटकर उतना ही दूसरी ओर जाता है। बाद में वह अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है परन्तु अपने स्थान पर आकर रुकता नहीं है, बल्कि इस प्रकार ऊपर - नीचे होकर कम्पन करता रहता है। यह कम्पन तब तक होता रहता है जब तक तार का वेग शांत नहीं होता तथा जब तक अपने स्थान से एक ओर जाकर तथा फिर दूसरी ओर आकर अपने पूर्व स्थान पर नहीं लौटता तब तक इस प्रकार वह एक आन्दोलन करता है। इन आन्दोलनों का क्रम चलता रहता है, परन्तु जब तार पर किये गये प्रहार की शक्ति कम हो जाती है, तब तार के ऊपर - नीचे आने जाने की दूरी भी कम होती जाती है और अन्त में तार शान्त हो जाता है, तार में कम्पन शान्त होने से उसकी ध्वनि भी शान्त हो जाती है।

2020-4-25 18

Scanned with CamScanner

इन आन्दोलनों को नापने का प्रयत्न किया है और उनके नापने का मापदण्ड सेकेण्ड तक रखा है एक सेकेण्ड में आन्दोलनों की संख्या जितनी कम होगी, ध्वनि उतनी ही नीची होगी तथा एक सेकेण्ड में आन्दोलनों की संख्या जितनी अधिक होगी। ध्वनि उतनी ऊँची होगी।

12. खाली :→ सम के बाद ताल में दूसरा स्थान खाली का होता है। जिस मात्रा पर खाली नहीं पड़ती अथवा बाये तबले पर खुला हाथ दिखाकर जो मात्राएँ बनायी जाती है वह खाली का स्थान होता है अधिकतर खाली का स्थान ताल की मात्राओं के लगभग बीच में पड़ता है, जैसे:→ तीनताल में 13 मात्राएँ होती है तथा खाली 9 वी मात्रा पर

13. सम :→ जिस मात्रा से ताल आरम्भ होता है अथवा जिस मात्रा से ताल किसी वाद्य पर बजाया जाता है उस मात्रा को उस ताल का सम कहते है। बहुधा ताल की पहली मात्रा पर होता है। सम पर एक विशेष प्रकार का जोर दिया जाता है जिससे अन्य मात्राओं में उसे पहचानने में आसानी होती है। गायन में भी गायक गीत का सम दिखाने के लिए जोर लगाकर अथवा सिर हिलाकर उसे स्पष्ट करता है।

2020-4-25 18:56

Scanned with CamScanner

8

14. ताली :→ सम के अतिरिक्त ताल में भिन्न-भिन्न मात्राओं पर तालियाँ पड़ती है। ये ताली अथवा खाली कहलाती है। उदाहरण के लिए तीन ताल मे पहली मात्रा पर सम है तथा 9 वी पर खाली है। इसलिए 5 वी तथा 13 वी मात्रा पर इस ताल की तालियाँ पड़ती है।

15. तिहाई :→ किसी टुकड़े के बोलो को एक प्रकार से तीन बार बजाकर सम पर आना तिहाई कहलाता है। तिहाई दो प्रकार की होती है। एक तो वह जिसमें तीनों टुकड़े बिना किसी रुकावट के एक के बाद एक करके लगा दिये जाते है तथा आखिरी टुकड़े के बाद सम आता है। इसको बेदमदार 'तिहाई' कहते है। दूसरी तिहाई वह होती है जिसमें प्रत्येक टुकड़े के बाद थोड़ा सा रुकते है और आखिरी टुकड़े के अन्त में सम आता है अर्थात पहले दो टुकड़ों पर दम देते है अर्थात तथा आखिरी टुकड़े के बाद 'धा' सम आ जाता है

→ बेदमदार →

(1) धेतिरकिटतक तातिरकिटक धाड तिर धेतिरकिटतक
तातिरकिटतक धाडतिर धेतिरकिटतक तातिरकिटतक

(2) दमदार :→ धा, तिर किटतक धाड धाड तिर किटतक धाड धाड तिर किटतक | धा

2020-4-25 18:57

Scanned with CamScanner

आरोह तथा अवरोह ऐसे दो विभाग होते हैं तथा जो क्रम एक अलंकार के आरोह में होता उसका उल्टा क्रम उसके अवरोह में होना अथवा है, उदाहरण के लिए नीचे कुछ अलंकारों अथवा पल्टों को दिया जा रहा है :→

1. आरोह :→ सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प ध ध, सां सां,

अवरोह :→ सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे,

2. आरोह :→ सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सां नि।

अवरोह :→ सां नि सां, नि ध नि, ध प ध, प म प, म ग म, ग रे ग, रे सा रे।

इस प्रकार अनेक अलंकार बनाये जा सकते हैं। इनकी संख्या निश्चित नहीं की जा सकती। जितनी नयी-नयी रचनाएं करते जायेंगे, उतने ही नये अलंकार बनते जायेंगे

18. गमक :→ 'गमक' शब्द के बारे में इस पुस्तक के प्रथम भाग में बतलाया जा चुका है, स्वर में कम्पन पैदा करने को जिससे सुननेवालों को प्रसन्नता प्राप्त होती है। गमक कहते हैं। स्वरों की यह क्रिया कई प्रकार से हो सकती है। जैसे :→

1. किसी एक स्वर में शीघ्रता से कम्पन करना।

2020-4-25 18:59

Scanned with CamScanner

2. एक स्वर पर जाने के लिए उसके ऊपर या नीचे के स्वर को खींचते हुए जाना।

3. एक स्वर से दूसरे स्वर पर एक बार में ही जाना।

4. एक स्वर से दूसरे स्वर पर एक ध्वनि को खण्डित न करते हुए जाना इत्यादि।

पं० सोमनाथ के ग्रन्थ 'रागविबोध' (1800) में वीणावादन की बाईस क्रियाओं का वर्णन मिलता है तथा कुछ विद्वानों के मतानुसार इन बाईस क्रियाओं में से उन्नीस क्रियाएं गमक के भेद मानी जा सकती है। कुछ लोगों का यह विचार है कि शारङ्गदेव (13 वी शताब्दी) के समय तक गमक के उन्नीस भेद प्रचार में थे, परन्तु ग्रन्थों में केवल गमक के 15 प्रकार ही है। जो इस प्रकार है:

1. कम्पित
2. आन्दोलित
3. आहत
4. प्लावित
5. उल्लासित
6. वलित
7. हम्फित
8. गिमिन्न
9. स्फुरित
10. तिरप
11. कुट्टित
12. भीन
13. उरुला
14. नामित
15. मिश्रित

2020-4-25 19:00

Scanned with CamScanner

करने में भी एक स्वर पर दूसरे स्वर का कण लेते हैं, पर कण में कुछ 'मींड' का भाव रहता है। और खटका में स्वर को झटके के साथ लेते हैं।

4. त्रिभिन्न गमक :→ एक अथवा अधिक स्वरों का शीघ्रता से तीनों सप्तकों में उच्चारण करना, त्रिभिन्न गमक कहलाता है। जैसे :→ ग म, ग म, ग म अथवा प़ प पं आदि, इसे आधुनिक समय में 'पुकार' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

5. स्फुरित गमक :→ कम्पित गमक को बार-बार शीघ्रता से कहने को स्फुरित गमक कहते हैं। आजकल इस गमक के अन्तर्गत गिटकिरी, मुर्की और जमजमा आते हैं।

2020-4-25 19:01

Scanned with CamScanner

Ques:- Basic Knowledge of the following Instru
Sitar, Tanpura, Tabla, Harmonium

→ सितार :- सितार के आविष्कार के सम्बन्ध में अभी तक कोई निश्चित मत नहीं है। बहुत से लोगों का विचार है कि चौदहवीं शताब्दी में 'अमीर खुसरो' ने वीणा के आधार पर 'सहतार' नामक वाद्य का आविष्कार किया। 'सहतार' एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ होता है, तीन तार का वाद्य, 'सहतार' ही बिगड़कर इस वाद्य 'सितार' कहलाने लगा। प्रारम्भ में इस वाद्य में कुल तीन तार होते थे, परन्तु परिवर्तन के अनुसार तीन के स्थान पर अब इसमें सात तार लगाये जाने लगे।

→ सितार के अंग :-

1. तूम्बा
2. तबली
3. धुरच
4. कील या लंगोट
5. डाँड
6. गुल अथवा गुल
7. तारगहन
8. अटी
9. परदे
10. मनका
11. खूटियाँ

2020-4-25

Scanned with CamScanner

1. तुम्बा :→ कद्दू अथवा लौकी का बना गोलकार भाग तुम्बा कहलाता है,

2. तबली :→ तुम्बे के ऊपर उसे ढँकने के लिए पतली लकड़ी का जो ढक्कन होता है, जिस पर घुरच आदि रखे जाते है, तबली कहलाती है।

3. घुरच :→ तबली के ऊपर लकड़ी अथवा हड्डी की एक चौकी होती है जिस पर सितार के तार रखे रहते है, घुरच (Bridge) कहलाती है।

4. कील या लँगोट :→ तुम्बे के सिरे पर सितार के तारों को बाँधने का जो प्रबन्ध होता है, उसमें अधिकतर लकड़ी अथवा हड्डी की कील लगाते है जिसमें तार बाँधे जाते है, इस कील को लँगोट, मेघारा अथवा कील कहते है।

5. डाँड :→ तुम्बे के बाद जो लम्बा भाग सितार का होता है जिसमें खूटियाँ आदि होती है, वह डाँड कहलाता है। यह लकड़ी का खोखला बना होता है। तानपूरे का डाँड सितार की डाँड से अधिक मोटा तथा गोलाकार होता है।

6. गुलू अथवा गुल :→ जिस स्थान पर तुम्बा और डाँड जुड़ते है उसे गुल अथवा गुलू कहते है।

2020-4-25 19:01

Scanned with CamScanner

7. तारगहन :→ खूँटियों के पास ही हड्डी अथवा दाँत की दो पट्टियाँ होती हैं। इसमें से जिसमें तार पिरोये जाते हैं तथा जिसमें तारों को पिरोने के छिद्र होते हैं। उसे तारगहन कहते हैं।

8. अटी :→ तारगहन के बाद दूसरी पट्टी जिस पर तार रखे जाते हैं, वह अटी कहलाती है।

9. परदे :→ डाँड के ऊपर पीतल अथवा लोहे के परदे तांत या धागे से बंधे रहते हैं, जिन पर अँगुली रखने से विभिन्न स्वर उत्पन्न किये जाते हैं। इनको 'परदे', 'सुन्दरी' अथवा 'कट' आदि नामों से पुकारते हैं। इनकी संख्या 13 से 19 तक होती है।

10 मनका :→ सितार के पहले तार में लँगोर (जहाँ तार बाँधे जाते हैं) और घुरज (Bridge) के बीच जो मोती पड़ी रहती है, तथा जिसमें तार के स्वर से मिलाने में सहायता मिलती है, उसे मनका या गुरिया कहते हैं।

11. खूँटियाँ :→ सितार में लकड़ी की बनी सात खूँटियाँ होती हैं जिनसे तार कसे अथवा ढीले किये जाते हैं। तरब के सितार में 12 खूँटियाँ और होती हैं।

2020-4-25 19:02

Scanned with CamScanner

→ सितार के तार :→ प्रथम तार लोहे का होता है। इसका प्रयोग अन्य तारों की अपेक्षा बहुत अधिक होता है। अतः इसे बाज का तार भी कहते है। यह तार लोहे का होता है, दूसरा और तीसरा तार पीतल का होता है जिन्हें मन्द्र सा से मिलाते है, इन्हें जोड़ी का तार कहते है। चौथा तार लोहे का होता है, जिसे मन्द्र प से मिलाते है, पाँचवा तार पीतल का होता है और इसे मन्द्र सा स्वर से मिलाते हैं। इसकी मोटाई अन्य तारो की तुलना में अधिक होती है। कुछ सितार वादक चौथे और पाँचवे तार का स्थान एक दूसरे से आपस में बदल लेते है। छठा तार लोहे का होता है जिसे मध्य सा से मिलाया जाता है। इसे चिकारी का प्रथम तार कहते है। सातवी और अन्तिम तार लोहे का होता है। इसे तार को सा से मिलाते है। इसे दूसरी चिकारी का तार कहते है। झाला बजाने में चिकारी के तार को विशेष रूप से प्रयोग करते है।

2020-4-25 19:02

Scanned with CamScanner

→ Basic Knowledge of Tanpura

तानपूरा :→ भारतीय संगीत में स्वर देने के लिए प्रमुख वाद्य का नाम तानपूरा है। तानपूरे को तम्बूरा, तानपूरा आदि नामों से भी पुकारा जाता है, तानपूरे का नाम उसके अविष्कार करनेवाले 'तुम्बरु' नामक गन्धर्व पर ही पड़ा। तार वाद्य होने के कारण गायन तथा वादन में स्वर देने के लिए इसको सर्वोत्तम माना है। आगे इस वाद्य के विविध अंगों का वर्णन किया गया है —

1. तूम्बा :→ लौकी अथवा कद्दू का बना गोलाकार बड़ा भाग तूम्बा कहलाता है।

2. तबली :→ तूम्बे को ढकने के लिए पतली लकड़ी का जो ढक्कन होता है जिस पर घुरच आदि रखे जाते है, तबली कहलाती है।

3. घुरच :→ तबली के ऊपर लकड़ी अथवा हड्डी की एक चौकी होती है, जिस पर तार रखे जाते है, वह घुरच (Bridge) कहलाती है।

4. कील या लगोट :→ तूम्बे के सिर पर तारों को बांधने का प्रबन्ध होता है। कभी तो लकड़ी की एक कील लगा दी जाती है और कभी लकड़ी में चार छिद्र कर दिये जाते है। इस स्थान को कील या लगोट कहते है।

Scanned with CamScanner

5. डांड :→ तूम्बे के बाद जो लम्बा भाग तानपूरे का होता है, जिसमे खूटियाँ आदि होती है वह डांड कहलाता है। यह भाग अन्दर से खोखला बना रहता है।

6. गुलू :→ तूम्बे और डांड के जोड़ने के स्थान को गुलू कहते है।

7. अटी और तारगहन :→ खूँटियों के पास हड्डी की दो पट्टियाँ लगी रहती है जिन पर तार आधारित होते है। इन दोनों पट्टियों में से जिस पट्टी पर तार रखे जाते है, उसे अटी कहते है और जिस पट्टी मे से तार पिरोये जाते है वह तारगहन कहलाती है।

8. खूँटियाँ :→ तानपूरे के अटी और तारगहन के पीछे चार खूँटियाँ होती है जिनमें तार कसे रहते है। इन खूँटियों के द्वारा ही तारों को कसा अथवा ढीला किया जाता है।

9. मनका :→ घुरच तथा कील के बीच तारों में मोती पड़े रहते है जो हाथी के दन्त, हड्डी अथवा काँच के होते है। इन मोतियों से तार को स्वर मिलाने में सहायता मिलती है। इन्हें मनका या गुरिया कहकर पुकारते है।

10. सिरा :→ अटी तारगहन के [illegible]

2020-4-25 19:03
Scanned with CamScanner

भाग जिसमें चार खूटियाँ होती है, सिरा कहा है।

11. तार :→ तानपूरे में चार होते है। इनमें से तीन फौलादी लोहे के होते है तथा एक पीतल का मोटा तार होता है। किसी - किसी तानपूरे में पीतल के दो तार होते है - एक मोटा और एक पतला ये चारों तार कील अथवा लँगोट में बंधे जाते है तथा घुरच के ऊपर से जाकर अटी और तारगहन में से होकर खूटियों में लपेटे जाते है।

2020-4-25 19:04

Scanned with CamScanner

→ Basic Knowledge of Harmonium

हारमोनियम :→ हारमोनियम एक पाश्चात्य सुषिर वाद्य है जिसका प्रचार आजकल भारतवर्ष में बहुत है। हारमोनियम शब्द का सम्बन्ध ग्रीस भाषा के हारमनी (Harmony) शब्द से है। हारमोनी शब्द पाश्चात्य संगीत का आधार है जिसका अर्थ स्वर-संवाद में एक साथ दो या अधिक स्वर मधुर भाव से उत्पन्न करना है। हारमोनियम को स्वर-मंजूषा, स्वर-पेटी आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

विद्वानों का कथन है कि हारमोनियम का अविष्कार फ्रांस के पेरिस शहर में सन 1840 ई० में अलेक्जेण्डर डेबेन (Alexander Debain) ने किया था। उसके समय में पाश्चात्य देशों में प्यानो फोर्ट (Pianoforte) नामक वाद्य का बहुत प्रचार था, जैसा कि पाश्चात्य देशों में अब भी है, इसी प्यानो की सहायता से डेबेन साहब ने हारमोनियम का अविष्कार किया।

हारमोनियम के स्वर फ्री-रीड्स (Free Reeds) कहलाते हैं। ये धातु के बने होते हैं तथा इनके बीच में एक पतली जबान (पत्ती) लगी रहती है जो हवा के टकराने से कम्पन करने लगती है। हारमोनियम की धौंकनी द्वारा हवा इन रीड्स (Reeds) में पहुंचाई जाती है। हवा के टकराने से रीड्स की जबान कम्पन करने लगती है और इस प्रकार स्वर उत्पन्न होता है। हारमोनियम के ऊपर की ओर स्वरों को उत्पन्न करने के लिए लकड़ी की पट्टियां लगी रहती हैं जिन्हें 'परदा' कहते हैं। ये परदे हारमोनीयम के रीड्स को एक ओर से बन्द किये रहते हैं जिससे हवा रीड्स में से निकल नहीं पाती और ध्वनि भी उत्पन्न

2020-4-25 19:04

Scanned with CamScanner

जब परदों को अंगुलियों से दबाया जाता है तब रीड्स दोनों ओर से खुल जाते हैं जिससे धौंकनी की हवा रिड्स में से निकल (Pass) जाती है और ध्वनि उत्पन्न होती है। हवा के बन्द होते ही रीड्स का कम्पन्न बन्द हो जाता है और ध्वनि भी समाप्त हो जाती है। हारमोनियम या तो (Single Reed) का होता है या (Double) का अधिकतर हारमोनियम तीन-साढ़े तीन सप्तक के होते हैं।

हारमोनियम को आधुनिक संगीत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस वाद्य की विशेषता यह है कि इसकी बनावट अति सरल है। एक प्राथमिक विद्यार्थी अथवा छोटा-सा बालक भी इसे बजा सकता है। अन्य वाद्यों की तरह इसके स्वर उतारे या चढ़ाये नहीं जाते। इसके स्वर मिले हुए होते हैं, केवल धौंकनी खोलकर परदे पर अँगुली रखने से स्वर निकलने लगता है। प्राथमिक विद्यार्थी से लेकर बड़े बड़े संगीतज्ञ लोग इस वाद्य का सहारा लेकर गाते हैं। महफिल में गाने-बजाने के लिए यह बहुत उपयोगी है। इस वाद्य से किसी भी स्वर को षड्ज मानकर गाया या बजाया जा सकता है।

2020-4-25 19:04

Scanned with CamScanner

# Basic Knowledge of Tabla

**तबले की उत्पति :-** तबले की परिभाषा प्रारंभि उत्पति के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत पाए जाते हैं किन्तु अधिकांश विद्वानों का ऐसा मत है कि अलाउद्दीन खिलजी के समय अमीर खुसरव नामक संगीत उद्दय ने पखावज को बीच में से दो भागों में काटकर तबले का अविष्कार किया कहा जाता है कि 'तबुल' नामक फारसी शब्द से 'तबला' की उत्पति हुई है। 'तबल' का अर्थ है नक्कारा कुछ विद्वानों के मत से तबले के अविष्कारक दिल्ली के उस्ताद 'सिद्धारखा ढाढ़ी' थे जिनके शिष्य 'रोशनखाँ' 'कलुखाँ' और 'तुलन खाँ' हुए।

**तबले के अंग :-**

1. तबला
2. पूड़ी
3. स्याही
4. चाँटी
5. मैदान
6. गजरा
7. गट्टे
8. बद्दी
9. मुँडरी

2020-4-25 19:04

Scanned with CamScanner

1. तबला :→ यह शीशम, नीम, चन्दन, सागौन आदि लकड़ियों में से किसी एक से बना हुआ खोखला होता है। इस पर खाल मढ़ी रहती है।

2. पूड़ी :→ जिस खोल से तबले को मढ़ा जाता है उसे पूड़ी कहते हैं। पूड़ी अधिकतर बकरी की खाल की बनती है। इसे बद्दी अथवा रस्सी से तबले पर कसते हैं।

3. स्याही → पूड़ी के बीचो बीच जो काला मसाला बना रहता है उसे स्याही कहते हैं। मसाला गोलाकार रखा जाता है।

4. चाँटी → पूड़ी के चारों ओर किनारे पर एक दोहरी पट्टी होती है जिसे चाँटी कहते हैं। चाँटी पर अँगुली के प्रहार से बोल निकलते हैं।

5. मैदान → स्याही और चाँटी के बीच में जो स्थान होता है, वह मैदान कहलाता है।

6. गजरा → पूड़ी के चारों तरफ चमड़े का गजरा होता है, जिसमें छिद्र होती है इन्हीं छिद्रों में बद्दी को बाँधा जाता है तथा गजरे

2020-4-25 19:05

Scanned with CamScanner

प्रहार करके तबले को कसने या उतारते हैं।

7. गट्टे → तबले को चढ़ाने या उतारने के लिए लकड़ी के आठ गट्टे होते हैं। ये गट्टे बद्धी के बीच में लगे रहते हैं।

8. बद्धी → पूड़ी पर तबले को कसने के लिए जो चमड़े की डोरी काम में लाई जाती है, उसे बद्धी कहते हैं।

9. मुँडरी → तबले के बीच नीचे चमड़े या सूतली, रस्सी की एक मुँडरी होती है, जिसे कुंडरी या मुंडरी कहते हैं। मुंडरी सेही हीकर बद्धी को कसते हैं।

2020-4-25 19:05

Scanned with CamScanner